International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2022; 4(1): 125-127
Received: 04-01-2022
Accepted: 09-03-2022

Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor, Sanskrit Department, Shri Durga Mahila Mahavidyalaya, Tohana, Fatehabad, Haryana, India

Corresponding Author:
Dr. Gauri Bhatnagar
Assistant Professor, Sanskrit Department, Shri Durga Mahila Mahavidyalaya, Tohana, Fatehabad, Haryana, India

दर्शन शास्त्र परम्परायाः वैश्विकं योगदानम्

Dr. Gauri Bhatnagar

सारांश
दर्शन शब्द दृश धातु के कारण अर्थ में ल्युट् प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है । इसका तात्पर्य है - देखना, समझना, प्रत्यक्ष जानना ।परंतु मात्र चक्षु इंद्रिय से देखना ही नहीं अपितु तत्व का साक्षात्कार भी दर्शन कहलाता है। दर्शन का साधन तथा साधक दोनों ही अलौकिक हैं। दर्शनशास्त्र का उद्देश्य है जगत एवं जीव के तत्त्व को समझना । अतः दर्शन का मुख्य लक्ष्य है- आत्मानुभव तथा आध्यात्मिक जीवन की यथार्थ पद्धति का अन्वेषण । दर्शन के आधार पर हमारी साधना-प्रणाली कर्म मार्ग के द्वारा मन की शुद्धि, उपासना मार्ग के द्वारा मन की एकाग्रता तथा ज्ञान मार्ग के द्वारा मन तथा आत्मा के आवरण को दूर करके जीव के परमात्मतत्त्व से योग का द्वार उद्घाटित करती है।

कूटशब्द: दर्शन शास्त्र परम्पराया, वैश्विकं योगदानम्, आत्मानुभव तथा आध्यात्मिक जीवन

प्रस्तावना
दर्शन का ध्येय है - आत्मानुभव तथा आध्यात्मिक जीवन की यथार्थ पद्धति का अन्वेषण। आध्यात्मिकता से अभिप्राय है - देह, मन तथा प्राण से भी महान आत्मतत्त्व को मानना तथा सामान्य मानसिक- प्राणिक प्रकृति से उच्चतर चेतना के लिए अभिलाषा करना ।यद्यपि दर्शन स्वयं को धार्मिक परिकल्पना के सम्मोहन से पूर्ण रूप से मुक्त नहीं कर सका है फिर भी धार्मिक रूपों द्वारा दार्शनिक विवेचन बाधित नहीं किया गया है। जो व्यक्ति जीवन तथा सिद्धांत के मध्य वास्तविक संबंध अनुभव करते हैं उनके लिए दर्शन जीवन में आध्यात्मिक उपलब्धि प्राप्त करने का एक मार्ग बन जाता है।

जहां तक दर्शन शास्त्र के वैश्विक योगदान का प्रश्न है तो विश्व को आत्मा मन कर्म सिद्धान्त योग आदि विभिन्न विषयों पर ज्ञान प्रदान करने और वैश्विक स्तर पर जागरूकता लाने का कार्य दर्शन शास्त्र ने किया है।

दर्शन का मुख्य विषय है - मनुष्य क्या है? इसके अनुसार मनुष्य एक शरीर नहीं है अपितु आत्मा है तथा मनुष्य का सर्वश्रेष्ठ उद्देश्य आत्मा का दर्शन ही है ।[1] आत्मा ही सबसे बड़ा सत्य है।[2] उसे जानने के बाद फिर कुछ जानना शेष नहीं रह जाता ।[3] पदार्थों में जीवात्मा के अंदर यथार्थ सत्ता का सर्वोच्च स्थान है। इसका स्वरूप भी वैसा ही है जैसा परब्रह्म का है । दर्शनशास्त्र में जीवात्मा और ब्रह्म दोनों एक दूसरे के पर्याय के रूप में प्रयुक्त हुए हैं । अयमात्मा ब्रह्म अर्थात् यह आत्मा ही ब्रह्म है। इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि वस्तुतः यह समस्त विश्व ब्रह्म ही है।अतः मुख्यतया आत्मा के दर्शन करवाने वाले विद्या ही दर्शन विद्या अथवा दर्शन शास्त्र के नाम से प्रसिद्ध है। इसी कारण गीता में इसे सब विद्या में श्रेष्ठ अध्यात्म विद्या कहा गया है।[4]

> "Darshana Is Not An Intuition However Much It May Be Allied To It. Perhaps The Word Is Advisedly Used To Indicate A Thought System Acquired By Intuitive Experience And Sustained By Logical Argument." [5]

दर्शनशास्त्र की प्रमुख शाखाएं लगभग 16 हैं । इसमें से भी सर्वप्रमुख हैं - चार्वाक्, बौद्ध तथा जैन ये तीन नास्तिक दर्शन तथा न्याय वैशेषिक सांख्य योग पूर्व मीमांसा और उत्तर मीमांसा अथवा वेदांत ये 6 आस्तिक दर्शन इन समस्त दर्शनों का प्राप्तव्य एक ही है जिसे दुखों की आत्यंतिक निवृत्ति, परमानंद की प्राप्ति, परम शांति, स्वातंत्र्य अथवा मोक्ष आदि शब्दों द्वारा पुकारा गया है। जो थोड़ा बहुत भेद है वह उनकी प्राप्ति के साधनों का ही प्रतीत होता है । अतः स्पष्ट है कि अज्ञान भ्रांति तथा दुखों से मुक्ति प्रदान कराना ही दर्शन विद्या का मुख्य उद्देश्य है।[6] इसी कारण इस शास्त्र का एक प्रसिद्ध नाम मोक्ष शास्त्र भी है। दुःख तथा बंधन से मुक्ति प्राप्त करना ही मोक्ष है।[7] अतः स्पष्ट है कि दर्शन के दो तथ्य प्रमुख हैं । प्रथम तो यह कि उनमें मोक्ष के सर्वोच्च आदर्श के मार्ग के अनुकरण पर बल दिया गया है द्वितीय इस आदर्श की प्राप्ति हेतु जो साधना का मार्ग बताया गया है उसमें पूर्ण रूप से वैराग्य की भावना का समावेश है अतः इससे यह सिद्ध होता है कि दार्शनिक चिंतन के मूल में न तो मात्र बौद्धिक चिंतन ही है और न ही नैतिकता का आदर्श, अपितु उसका लक्ष्य इससे भी कहीं उन्नत तथा यथार्थवादी है।

दर्शनशास्त्र में ज्ञान के उपकरण के रूप में मन का अत्यधिक महत्व है। ऐसा विश्वास है कि आत्मा को बंधन में डालने तथा उसे बंधन से मुक्त करवाने का कारण यह मन ही है। इस त्रिगुणात्मक संसार में आसक्त होने पर यह बंधन का कारण तथा आत्मा में अनुरक्त हो जाने पर मोक्ष का कारण होता है।[8] अतः मन ज्ञान के लिए आत्मा का साधन माना गया है । गीता भी कहती है कि यह जीवात्मा ज्ञानेंद्रियों तथा मन की सहायता से वाह्य तथा आंतरिक विषयों का ग्रहण करता है ।[9] अतः संस्कृति की उच्चतम साधना प्रणाली कर्म मार्ग के द्वारा मन की शुद्धि, उपासना मार्ग के द्वारा मन की एकाग्रता तथा ज्ञान मार्ग के द्वारा मन तथा आत्मा के आवरण को दूर कर जीव को परमात्म-तत्त्व बन जाने का द्वार उद्घाटित करती है।

इसके अतिरिक्त समस्त दर्शनों ने जीवन के परम कल्याण को लक्ष्य मानकर उसके उपाय आदि के विषय में गंभीरता से विचार किया है।[10] इनमें सर्व प्रथम स्थान वैदिक दर्शन का है। वैदिक दर्शन में यज्ञों द्वारा देवों को संतुष्ट कर दूसरे शब्दों में उन्हें प्रसन्न कर मानव जीवन की समृद्धि की भावना प्रमुख है। वैदिक आर्यों का दृढ़ तथा अनुशासित जीवन इसी कर्म दर्शन से अनुप्राणित था। जीवन की ऐहिक समृद्धि के प्रति जागरूकता का इससे अधिक दृष्टांत क्या हो सकता है कि प्राचीन दर्शन शास्त्र सहस्त्रों वर्षों की यात्रा करके आज भी गौरव से जीवित है तथा मानव जीवन को आज भी अनेक रूपों में प्रभावित कर रहा है।

उपनिषदों ने शिथिल होते जीवन- प्रवाह को एक नई गति प्रदान की[11], नए सिरे से जीवन के रहस्यों को समझाया तथा समाज के चिंतन को ऐसी तीक्ष्ण शैली प्रदान की जिसमें यथार्थ सत्य को आडंबर रहित रूप में अपनाया जाने लगा । इसके साथ ही परलोक और स्वर्ग के आदर्श को शिथिल करके इसी जीवन में पूर्णता का मार्ग आलोकित किया । उपनिषदों के अनुसार मृत्यु यथार्थ तत्व न होकर एक प्रकार की प्रतीति है क्योंकि जो विनाश हुआ प्रतीत होता है, वह तो वास्तव में रूपांतर और पुनर्जन्म के लिए एक आयोजन है।

दर्शन का एक पक्ष और है - आचार पक्ष । इस पक्ष में यह जीवन की व्यावहारिकता के बहुत निकट है ।जैन तथा बौद्ध दर्शन तो सदाचार दर्शन ही कहे जा सकते हैं। इनके अतिरिक्त योग दर्शन के अंतर्गत अष्टांग योग के प्रथम दो अंग यम तथा नियम हैं। इस प्रकार यम पांच हैं - अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह [12] तथा नियम भी पांच हैं - शुद्धि, संतोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर चिंतन ।[13] ये समस्त यम नियम साधक के सांसारिक तथा ऐहिक जीवन को उन्नत बनाने के लिए ही हैं ।अतः स्पष्ट है कि दर्शनशास्त्र का वैश्विक स्तर पर योगदान बहुत बड़ा है ।

इसके साथ ही समस्त दर्शनों का कर्म सिद्धांत पर विश्वास है ।क्योंकि कर्म सिद्धांत शाश्वत नैतिक व्यवस्था पर आधारित है। इसके अनुसार जीव जो शुभ अथवा अशुभ कर्म करता है, उसके अनुसार उसे फल अवश्य प्राप्त होता है। जीव के कर्म कभी नष्ट नहीं होते अपितु संचित होते रहते हैं तथा समाज के स्वरूप का निर्धारण करते हैं कर्मों के तीन भेद बताए गए हैं संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म तथा क्रियमाण कर्म। संचित कर्म अर्थात् जो कर्म पूर्व जन्मकृत कर्मों से उद्भूत होते हैं परंतु उनका प्रभाव अभी प्रारंभ नहीं हुआ है । प्रारब्ध कर्म का संबंध इस जन्म में किए गए संपूर्ण कर्मों से है तथा उनका फल भी इसी जीवन में प्रारंभ हो गया है क्रियमाण कर्मों का संचय वर्तमान जीवन में ही होता है ।इस प्रकार दर्शनशास्त्र कर्म की विस्तृत व्याख्या के साथ यह प्रतिपादित करता है कि शुभ अथवा अशुभ कर्मों के भोग के लिए ही जीव शरीर ग्रहण करता है परंतु इसके साथ ही यह भी कहा गया है कि जो व्यक्ति सत्व, रज, तम इन तीन गुणों से व्याप्त कर्मों को तथा अपने समस्त अहंकार आसक्ति आदि भावों को परमात्मा को समर्पित कर देता है, तो उन कर्मों का अभाव हो जाने से उसके पूर्व संचित कर्म समूह का भी नाश हो जाता है तथा वह परमात्मा को प्राप्त हो जाता है ।[14]

अतः स्पष्ट रूप से दर्शन हमें यह सिखाता है कि कर्मवाद पर विश्वास करने के साथ ही हमें समस्त कर्मों को ईश्वर को समर्पित कर देना चाहिए जिससे हम शुभ अथवा अशुभ कर्म फल के भोग से तथा इस सांसारिक बंधन से मुक्त हो सकें। इस प्रकार दर्शनशास्त्र में कर्मवाद से पूर्ण रूप से मुक्त होने का मार्ग भी बताया गया है। प्रत्येक मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इस संसार में ईश्वर के लिए आसक्ति रहित होकर अपने कर्तव्य का पालन करे । ईश्वर के लिए किया गया कर्म बंधन का हेतु नहीं होता । कर्म करते हुए भी उसमें लिप्त ना होना एकमात्र कल्याण का मार्ग है इसी के द्वारा मनुष्य जन्म मरण रूपी बंधन से मुक्त हो सकता है।[15]

अतः स्पष्ट है कि दर्शनशास्त्र न केवल मोक्ष, आत्मा, परमात्मा, माया आदि अमूर्त तथा परोक्ष तत्वों को ही स्वीकृत करता है अपितु वह जीवन की यथार्थवादी आचार प्रधान तथा व्यावहारिक दृष्टि के प्रति भी जागरूक है वस्तुतः इसमें भौतिकता तथा आध्यात्मिकता का ऐसा अद्वितीय संतुलन है जो जीव मात्र के लिए पूर्णता का द्वार है।

प्रस्तावना

1. आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यः मंतव्यश्च। (वृहदारण्यक उपनिषद 2/4/5)
2. आत्मन् एवेदं सर्वम्। (छान्दोग्य उपनिषद 7/26/1)
3. यज्ज्ञात्वा नेहभूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते। (श्रीमद्भगवत गीता 7/2)
4. अध्यात्मविद्या विद्यानाम्। (वही 10/32)
5. डॉ राधाकृष्णन, 'इन्डियन फिलासफी', वाल्यूम वन, 1994, नेल ओ ब्रायन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, नई दिल्ली, पृ. 43
6. अथ त्रिविध दुःखात्यन्तनिवृत्तिरत्यन्तपुरुषार्थः (सांख्य सूत्र 1/1)
7. तदत्यंतविमोक्षोऽपवर्ग। (न्याय सूत्र 1/1/22)
8. चैतःखल्वस्य बन्धाय मुक्तये चात्मनो मतम्।
   गुणेषुसक्तं बन्धाय रतं वा पुंसि मुक्तये।। (श्रीमद्भागवत 3/25/15)
9. श्रोत्रम् चक्षुः स्पर्शनं च रसनं घ्राणमेव च ।
   अधिष्ठाय मनश्चायं विषयानुपसेवते।। (श्रीमद्भगवत गीता 15/9)
10. विवेकख्यातिरविप्लवा हानोपायः। (योगसूत्र साधन 26)
11. "अविद्यायामन्तरे वर्तमानाः स्वयं धीराः पंडितं मन्यमानाः।
    जङ्घन्यमानाः परियन्ति ई मूढा अंधेनैव नीयमाना यथान्धा।।" (मुंडक उपनिषद 1/2/8)
12. अहिंसा सत्यास्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रह यमाः। (योगसूत्र 2/30)
13. शौचसंतोषतपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि नियमाः। (योगसूत्र 2/32)
14. आरंभकर्माणि गुणान्वितानी भावांश्च सर्वान् विनियोजयेद् यः।
    तेषामभावे कृतकर्मनाशः कर्मक्षये याति स तत्त्वतोऽन्यः।। (श्वेताश्वतर उपनिषद 6/4)
15. कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समा ।
    एवं त्वयि नान्येतोऽस्ति न कर्म लिप्यते नरः। (ईशावास्योपनिषद 2)